नईदुनिया तरंग रविवारीय
रविवार, 4 सितंबर 2016
www.naidunia.com
tarang@naidunia.com

बच्चों को सिखाएं ये जरूरी सबक
पेज-4

भारत में शिक्षकों से जुड़ी कुछ चौंकाने वाली खबरें आपने जरूर देखी होंगी। कभी जर्जर भवन में बच्चों को पढ़ाते शिक्षक देखे होंगे तो कभी किसी पेड़ के नीचे कक्षाएं चलती देखी होंगी। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था शिक्षक के इर्द-गिर्द ही घूमती है। शिक्षक अगर धुन का पक्का है तो वह तमाम परिस्थितियों को अनुकूल बना सकता है। इस दौर में जबकि शिक्षक का सम्मान लगातार कम हो रहा है तब उन शिक्षकों की कहानियां मिसाल हैं जो बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए जी-जान से जुटे हैं। इनमें से बहुत से शिक्षक तो साधनहीन हैं लेकिन उनका जज्बा गजब का है। बहुत कम संसाधनों के साथ बच्चों की दुनिया में उजाला फैलाने के मिशन में वे चुपचाप जुटे हैं। जिन चीजों के लिए ये शिक्षक अपने बचपन में तरसते रहे उसका अभाव वे बच्चों को महसूस नहीं होने देना चाहते हैं।

असम के पामोही गांव में जन्मे और बढ़े हुए उत्तम तेरोन ऐसे ही एक शिक्षक हैं। उन्होंने जब देखा कि गांव के बच्चों की पढ़ने की क्षमता कमजोर है तो उन्होंने उसे बदलने का निश्चय किया। उन्होंने गरीब तबके के ऐसे कमजोर बच्चों के लिए स्कूल चलाने का फैसला लिया। पैसा सबसे बड़ी दिक्कत थी और माता-पिता उनके इस विचार से सहमत नहीं थे। महज 800 रुपए में उन्होंने टिन की छत के नीचे स्कूल शुरू किया। स्कूल को नाम दिया 'पारिजात' जिसका अर्थ होता है स्वर्ग का फूल। माता-पिता बार-बार चेताते रहे लेकिन बेटे के सपने में आखिर उन्हें यकीन करना ही पड़ा। जब बच्चों की संख्या बढ़ी तो उत्तम ने पुरानी किताबें, यूनिफॉर्म, नोटबुक और फर्नीचर जैसी चीजें जुटाईं। 4 बच्चों के साथ शुरू हुए स्कूल में अब 540 बच्चे हैं और 23 टीचर। उत्तम का लक्ष्य है कि गांवों में बच्चे पढ़ाई से वंचित न रहें।

यहां हम कैसे भूल सकते हैं केरल के मालाप्पुरम के शिक्षक अब्दुल मलिक को जो बच्चों को पढ़ाने के लिए तैरकर स्कूल पहुंचते हैं। ऐसे शिक्षक ही किसी भी देश को बनाते हैं।

5 कारण: क्यों बनना चाहते हैं शिक्षक

1. क्योंकि बच्चों के बीच और बदलाव के लिए काम करने का मौका मिलता है।
2. क्योंकि इस काम में पर्याप्त विविधता है। काम रोज एक जैसा नहीं होता।
3. क्योंकि पढ़ाने में कई रोचक अनुभव मिलते हैं और कक्षा में रचनात्मकता की पूरी संभावना होती है। बच्चों से सीखने को भी मिलता है।
4. क्योंकि बचपन में जो टीचर्स मिले उनका प्रभाव व्यक्ति पर रहता है और इस कारण वह भी इस पेशे में आता है।
5. क्योंकि जो लोग अपने विषय से प्यार करते हैं वे उससे जुड़े रहने के लिए टीचिंग के पेशे में आ जाते हैं। पढ़ने और पढ़ाने का अवसर।

5 कारण: शिक्षक क्यों छोड़ते हैं नौकरी

1. क्योंकि करीब 76 प्रतिशत शिक्षक मानते हैं कि इस नौकरी में काम का बोझ ज्यादा है।
2. क्योंकि वे मानते हैं कि उनके पेशे को सम्मान नहीं दिया जाता और दिनोदिन इस पेशे का सम्मान कम हो रहा है।
3. क्योंकि शिक्षकों की सेवा शर्तों में लगातार बदलाव होता रहता है। उनके काम में बहुत ज्यादा दखल दिया जाता है।
4. क्योंकि छात्रों का बर्ताव भी अब बदल रहा है। ऐसे में बहुत सारे शिक्षकों को बच्चों पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिल पाता है।
5. क्योंकि समय-समय पर आने वाले जांच दल हर चीज का दोष शिक्षकों पर ही मढ़ देते हैं और इस बात का उन्हें बुरा लगता है।

स्रोत : द गार्जियन की एक रिपोर्ट

2001 में शिक्षक

- 1896,000 – प्राइमरी शिक्षक
- 1326,000 – माध्यमिक शिक्षक
- 1761,000 – हाई-हायर सेकेंडरी शिक्षक
- सितंबर 2004 के अनुसार भारत में 3, 680,000 प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षक थे जिनमें से 259,099 संविदा शिक्षक थे।

खेल-खेल में विज्ञान शिक्षा देने वाले गुरुजी

अरविंद गुप्ता कबाड़ से खिलौने बनाने में माहिर हैं। वे ऐसे शिक्षक हैं जो खिलौने के बहाने विज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन की शिक्षा देते हैं। खेल-खेल में और आनंदपूर्ण शिक्षा ही उनका लक्ष्य है। उनकी वेबसाइट पर हिंदी, अंग्रेजी और मराठी की कई सुंदर पुस्तकें पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। वे अपने वीडियोज भी यू-ट्यूब पर अपलोड करते हैं और इस तरह कई चीजों के पीछे छिपे विज्ञान को उजागर करते हैं। 1970 के दशक में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर से निकले अरविंद ने 1978 में होशंगाबाद साइंस टीचिंग प्रोग्राम में हिस्सा लिया। यहां उन्होंने पहले पहल उपलब्ध चीजों से खिलौने बनाकर विज्ञान को रोचक तरीके से समझाने का तरीका खोजा था। उन्होंने पाया कि बच्चों को यह तरीका बहुत ही रोचक लगता है और बस उन्होंने इसे अपना लिया।

> मैं बच्चों के साथ काम करना पसंद करता हूं। मैं वह काम करना पसंद करता हूं जिसे करने से बच्चों के चेहरे पर मुस्कान आ सके। इसलिए मैंने इसे चुना।'
> – अरविंद गुप्ता

ताकि कोई बच्चा स्कूल से वंचित न रहे

नई दिल्ली में रोज सुबह अपनी दुकान खोलने से पहले राजेश शर्मा ब्रिज के नीचे स्थापित स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के लिए जाते हैं। वर्ष 2006 में स्थापित उनके स्कूल को अब 10 वर्ष होने को आए हैं। वे कहते हैं, 'मैं नहीं चाहता कि कोई बच्चा इसलिए शिक्षा से वंचित रहे क्योंकि वह गरीब है।' उन्होंने रेलवे ब्रिज के नीचे बच्चों को अनौपचारिक तरीके से पढ़ाना शुरू किया। राजेश अक्सर गरीब बच्चों को कीचड़ में खेलते हुए देखते थे और जब उन्होंने बच्चों के माता-पिता से बात की तो पता चला कि वे अपने बच्चों को स्कूल इसलिए नहीं भेजते क्योंकि स्कूल दूर है। फिर स्कूल जाने के लिए हाइवे क्रॉस करना होता है। तब राजेश ने ब्रिज ने नीचे ही स्कूल शुरू किया और परिवार को समझाया कि बच्चों को पढ़ाएंगे तो फायदा होगा। कुछ सप्ताह में उनके पास 140 बच्चे पढ़ने आने लगे।

> 'मैं आर्थिक तंगी के कारण इंजीनियर नहीं बन सका। मुझे कॉलेज छोड़ना पड़ा। मैं इन बच्चों को पढ़ाकर अपना सपना पूरा कर रहा हूं। यह मेरे लिए खुशी है।'
> –राजेश शर्मा

सबसे छोटे हेडमास्टर का इरादा

तेईस वर्षीय बाबर अली उस समय महज 9 साल के थे जब उन्होंने स्कूल शुरू किया था। वे दुनिया के सबसे छोटे हेडमास्टर हैं। पश्चिम बंगाल के भाबटा गांव में उनके स्कूल में आठ छात्र थे और अब यह स्कूल सर्टिफाइड हो चुका है। वर्ष 2015 में इस स्कूल में 300 छात्र थे और 10 शिक्षक। आनंद शिक्षा निकेतन नाम का यह स्कूल लोगों के बीच खास पहचान रखता है और प. बंगाल सरकार भी इसे प्रतिष्ठित मानती है। बाबर इस स्कूल की शुरुआत के बारे में कहते हैं कि यह एक खेल की तरह शुरू हुआ था जबकि मैं अपनी बहन को पढ़ाता था। बाद में गांव के कुछ और बच्चे भी पढ़ने के लिए आने लगे और इस तरह स्कूल शुरू हुआ। इस अनोखे शिक्षक की उपलब्धि यह है कि उनकी स्कूल में पढ़े छह छात्र अब वहीं पढ़ाते भी हैं।

> 'अभी भी मेरे गांव में ऐसे कई लोग हैं जो स्कूल नहीं जाते और अभी लंबा सफर तय करना है क्योंकि बहुत सारे बच्चे शिक्षा से वंचित हैं। स्कूल सबको हासिल हो।'
> – बाबर अली

शिक्षा को बच्चों तक लेकर गए
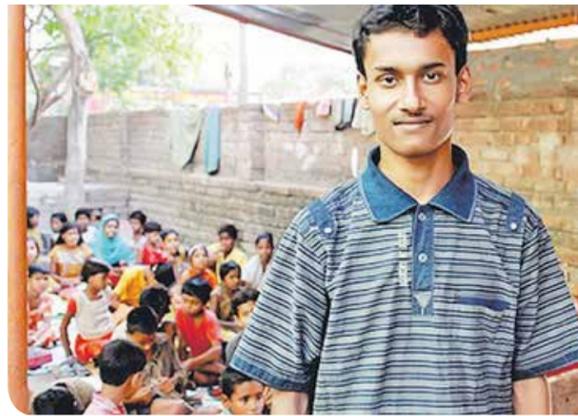
आदित्य कुमार को जानने वाले 'साइकिल गुरुजी' के नाम से जानते हैं। उप्र के लखनऊ में वे हर दिन करीब 60 से 65 का सफर साइकिल पर ही करते हैं और झुग्गी बस्तियों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराते हैं। 1995 से वे इस काम में लगे हुए हैं। विज्ञान स्नातक आदित्य ने अपना पूरा जीवन इन बच्चों को शिक्षा देने में लगा दिया है। आदित्य बच्चों को अंग्रेजी और गणित की शिक्षा देते हैं ताकि वे नियमित स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाएं। कुमार के ज्यादातर छात्र 10 वर्ष से कम उम्र के हैं। कुमार से मिलने के पहले तक इन बच्चों को पता भी नहीं था कि क्लास क्या होती है और उनके पास स्कूल जाने की कोई वजह नहीं थी। यह शिक्षक इन बच्चों को शिक्षा के उजाले में लाने के लिए प्रयासरत है।

> 'मैं जानता हूं कि शिक्षा पाने के लिए कितनी मुश्किलों के लिए गुजरना पड़ता है। यही कारण है कि मैं इन बच्चों के लिए कुछ करना चाहता हूं।
> – आदित्य कुमार

भारत इस समय अच्छे शिक्षकों की कमी से जूझ रहा है। शिक्षक दिवस पर यह विचार जरूरी है कि आखिर यह कमी क्यों है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है।

इसलिए नहीं हैं हमारे पास बेहतर शिक्षक

– अनुराग बेहर
वाइस चांसलर, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

शिक्षा के क्षेत्र में हमने लंबा सफर तय किया है लेकिन जिस तरह हमारे शिक्षक तैयार होते हैं वह बहुत डरावना सच है। शिक्षा देने से पहले युवा जिस बीएड कोर्स से गुजरते हैं उसकी स्थिति पूरे ही देश में खराब है। इसके कॉन्सेप्ट में भी दोष है और इसे लागू करने में भी। दुनिया में ऐसा कहीं नहीं होता है कि 12 वर्ष तक स्कूली शिक्षा पाने और एक दो वर्षीय डिप्लोमा करने के बाद कोई भी शिक्षक बनने का पात्र हो जाए। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले प्रोफेशनल्स की मांग और उनकी उपलब्धता के बीच एक बड़ी खाई नजर आती है। यहां प्रोफेशनल्स से मेरा अभिप्राय उन लोगों से है जो शिक्षकों को शिक्षित करते हैं। ये वे लोग होते हैं जो करिकुलम डिजाइन करते हैं, शिक्षा की तकनीक पर बात करते हैं, शिक्षा के प्रबंधन को समझाते हैं, बाल शिक्षा को समझते हैं, अध्यापन के विज्ञान को जानते हैं या विशेष शिक्षा के महत्व से रूबरू होते हैं। हमारे यहां इन सभी क्षेत्रों में योग्य लोगों की कमी बनी हुई है। भारत में हर वर्ष विश्वविद्यालयों से निकलने वाले 50 से 100 लोग ही ऐसे होते हैं जो ऐसी विशेषज्ञता रखते हैं। कनाडा की जनसंख्या 3.3 करोड़ है लेकिन वहां 1500 से 2000 ऐसे विशेषज्ञ विश्वविद्यालयों से हर साल निकलते हैं। भारत और कनाडा के बीच जो अंतर है वह हमारे संस्थानों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

तो आखिर कमी कहां है? हमारे यहां 85 से 90 प्रतिशत शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाले कॉलेज निजी हैं। निजी कॉलेज होने में कोई खराबी नहीं है मगर इनमें से 80 प्रतिशत ऐसे हैं जिनकी शिक्षा में कोई रुचि नहीं है। ये केवल पैसा कमाने के उद्देश्य से खोले गए हैं। अगर हम शिक्षा को इस तरह चलाते हैं तो कभी हमारे यहां अच्छी व्यवस्था नहीं बन पाएगी। हमें ऐसे कॉलेज बंद करने की जरूरत है। इसके बाद शिक्षा के प्रबंधन का काम करने वालों की क्षमता बढ़ाने की जरूरत है। उसमें भी हमें जरूरी निवेश करना होगा। फिर प्रश्न यह उठता है कि हमें शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए कितना समय लगेगा? इस पूरे काम के लिए करीब 30 से 40 वर्षों का समय लगेगा। श्रेष्ठ स्कूली शिक्षा व्यवस्था के लिए फिनलैंड की प्रशंसा होती है। इस देश ने 55 लाख की आबादी पर ऐसी सफलता पाने के लिए 50 साल मेहनत की है। हमें तमाम पहलुओं को देखते हुए उनके दोषों को दूर करना होगा। जिम्मेदारी से ही व्यवस्था बदली जा सकेगी।

अस्थायी शिक्षकों के हाथ देश का भविष्य

– कृष्ण कुमार
शिक्षाविद् व पूर्व निदेशक, एनसीईआरटी

हमारे देश में प्राइमरी शिक्षक कौन बनना चाहता है? संभवत कोई भी नहीं। इस पद के लिए कक्षा 12 वीं की डिग्री और दो वर्ष का डिप्लोमा जरूरी होता है। लेकिन इस तरह बनने वाले शिक्षकों को तनख्वाह इतनी कम दी जाती है कि उससे खर्च चलाना भी मुश्किल है। यही वजह है कि उत्साही युवा जब दूसरे चमकदार करियर में नहीं जा पाते हैं तो वे शिक्षक बन जाते हैं। फिर एक बार जब वे प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक बन जाते हैं तो उनका पूरा ध्यान अपनी योग्यता बढ़ाकर कहीं और पहुंचने पर होता है। वे सेकेंडरी के शिक्षक बनना चाहते हैं। यह कैसी विसंगति है कि एक तरफ तो हम कहते हैं कि प्राथमिक शिक्षक हमारे देश की नींव है लेकिन दूसरी तरह उस की स्थिति ऐसी है।

नब्बे के दशक में कई राज्य सरकारों ने नियमित शिक्षकों की जगह अनियमित शिक्षकों की नियुक्ति शुरू की। इन्हें आकर्षक नाम दिए गए जैसे मध्यप्रदेश में इन्हें गुरुजी कहा गया तो उप्र में शिक्षा मित्र, आंध्रप्रदेश में विद्या वॉलिन्टियर्स और इसी तरह अन्य राज्यों में कुछ और। इन्हें नियमित शिक्षक की तुलना में बहुत कम वेतन दिया जाता था। स्कूल के शिक्षक की नौकरी को अस्थायी बनाकर पैसा बचाने का यह विचार मप्र सरकार को इतना अच्छा लगा कि स्थायी रूप से नियुक्त पुराने शिक्षकों को 'डाइंग काडर' घोषित कर दिया था- यानी, भविष्य में पुराने वेतनमान पर स्थायी शिक्षकों की भर्ती नहीं की जाएगी। यहां जनशिक्षण अधिनियम के तहत प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों की भर्ती का जिम्मा पंचायतों को सौंप दिया गया था। उच्च शिक्षा पर गौर करें तो कॉलेजों में प्रवक्ता के पद पर आखिरी भर्ती 25 साल पहले हुई थी। ये प्रक्रियाएं अन्य राज्यों में भी चली हैं लेकिन मध्यप्रदेश ने उन्हें कहीं ज्यादा उत्साह से आगे बढ़ाया है। संविदा शिक्षकों की भर्ती कर धीरे-धीरे हजारों स्थायी शिक्षकों के पद समाप्त करने की नीति को सबसे पहले मध्यप्रदेश ने ही अपनाया था। बिहार और छत्तीसगढ़ भी तनिक देर से लेकिन इसी लीक पर चल पड़े। कई राज्यों में प्राथमिक शिक्षा इन्हीं अस्थायी शिक्षकों के हाथ में है। इस बदलाव को अब जबकि कई बरस बीत गए हैं तो हम ऐसे बच्चों को देख रहे हैं जिनकी समझ और गणितीय कौशल कमजोर है। स्पष्ट है कि जब हम शिक्षकों की कद्र करना भूल जाएंगे तो भविष्य की पीढ़ी को कैसे तैयार कर पाएंगे? लिहाजा हम खामियाजा भुगत रहे हैं।